एक अदद शब्द के लिए

चलिए बाज़ार तक चलें...

संपादक
डॉ. शिखा तिवारी, इं. माधव कृष्ण

एक अदद शब्द के लिए
चलिए बाज़ार तक चलें

संपादकद्वय
डॉ. शिखा तिवारी
इंजी. माधव कृष्ण

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर

ISBN : 978-93-91635-15-2

पुस्तक : **एक अदद शब्द के लिए चलिए बाज़ार तक चलें**

संपादकद्वय © : डॉ. शिखा तिवारी, इंजी. माधव कृष्ण

प्रकाशक : **उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**

A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)

Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com

Mob. : 8707662869

संस्करण : प्रथम, 2022

मूल्य : 195/-

आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

12

उमाशंकर तिवारी के गीतों में मर्मस्पर्शीय लोकचेतना

—डॉ. संगीता मौर्य

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला नवगीत की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं– नव गति, नव लय, ताल छंद नव, नवल कंठ नव, जलद मंद्र रव/नव नभ के नव विहग वृंद को नव पर नव स्वर दे कहते हैं।।

अपने गीत और कथन से नई सोच, नये उपमानों और नये प्रतीकों आदि सभी में नवीनता लाने वाले गीत ही नव गीत कहलाते हैं। हिंदी में 'नवगीत' की पहली बार चर्चा राजेंद्र प्रसाद सिंह की 'गीतांगिनी' में मिलती है। 'गीतांगिनी' की भूमिका में बतौर संपादक राजेंद्र प्रसाद सिंह लिखते हैं– "नयी कविता के कृतित्त्व से युक्त या वियुक्त भी ऐसे धातव्य कवियों का अभाव नहीं है जो मानव जीवन के ऊँचे गहरे, किन्तु सहज नवीन अनुभव की अनेकता, रमणीयता, मार्मिकता, विच्छित्ति और मांगलिकता को अपने विकसित गीतों में सहेज सवार कर नई 'टेक्निक से हार्दिक परिवेश की नयी विशेषताओं का प्रकाशन कर रहे हैं। प्रगति और विकास की दृष्टि से उन रचनाओं का बहुत मूल्य है, जिनमें नई कविता की प्रगति का पूरक बनकर 'नवगीत' का निकाय जन्म ले रहा है। नव गीत नई अनुभूति की प्रक्रिया में संचयित मार्मिक समग्रता का आत्मीयता स्वीकार होगा, जिसमें अभिव्यक्ति के आधुनिक निकायों का उपयोग और नवीन प्रविधियों का संतुलन होगा।" आगे चलकर 'गीतांगिनी' की भूमिका को 'नवगीत' का घोषणापत्र माना जाने लगा। अतः हम कह सकते हैं कि नवगीत अपने समकाल के जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यंजित करने वाला वह गीत जो जीवन की समग्रता को अनुभूति में ढालकर प्रस्तुत करता है। नवगीतकारों की एक लम्बी और समृद्ध परंपरा रही है। इनमें से प्रमुख नवगीतकार हैं– राजेंद्र प्रसाद सिंह, ठाकुर प्रसाद सिंह, वीरेंद्र मिश्र, शम्भुनाथ सिंह, वीरेंद्र जैन, नीरज रवीन्द्र भ्रमर, कुँवर बेचैन के साथ ही उमाशंकर तिवारी जो नवगीत के दुनिया की एक ऐसी हस्ती हैं जो अपनी रचनाओं की खनक के साथ समाज के सामने उपस्थित होते हैं। ये केवल उपस्थित ही नहीं होते बल्कि जरूरी हस्तक्षेप भी करते हैं। उमाशंकर तिवारी का जन्म उत्तर–प्रदेश के गाजीपुर जनपद के बहादुरगंज नामक गाँव में हुआ था। गँवई–गाँव से जुड़े होने के कारण उमाशंकर तिवारी के गीतों में गाँव को बचाने की गहरी संवेदना दिखाई देती है। आज जब गाँव शहर में तब्दील होते जा रहे हैं, शहर की दौड़ मची हुई है तब